रिपोर्ट

मकतब-मदरसों में

गुणात्मक प्राथमिक शिक्षा

(जिला स्तरीय सेमिनार)

24 जनवरी 2009, स्थान : बाराबंकी

नालन्दा

''मकतब–मदरसों में गुणात्मक प्राथमिक शिक्षा''

(जिला स्तरीय सेमिनार)

24 जनवरी 2009
स्थान : बाराबंकी

रिपोर्ट

नालंदा

B-1/84, सेक्टर – B, अलीगंज, लखनऊ – 226 024
Tel. : 0522-2329751, 4028035
Email : nalanda_lko@rediffmail.com

सेमिनार रिपोर्ट
मकतब मदरसा में गुणात्मक प्राथमिक शिक्षा
24 जनवरी, 2009

'तालीम में पीछे छूट जाने की वजह से आज मुसलमान हर क्षेत्र में पीछे छूट रहे हैं जबकि एक समय वे दुनिया भर में हर मामले में सबसे आगे थे। हमें याद रखना होगा कि अल्लाताला ने तालीम की वजह से ही हजरत आदम को दुनिया का खलीफा बनाया था। जब इस्लाम के बुजुर्गों ने मदरसों की नीव रखी तो उनका मूल जरूर अरबी का था, पर मदरसों में पढ़ाई के लिए वे वहां की जुबानों को शामिल करते थे। इससे यह भी मान लेना चाहिये कि कोई जुबान हमारी प्रतीक नहीं है तथा दीनी व दुनियावी तरक्की के लिए हमें किसी जुबान से परहेज नहीं रखना चाहिये। हिन्दुस्तान में आजादी से पहले मदरसों में काफी हिन्दू बच्चे पढ़ते थे। मदरसों से निकलने वाले अनेक हिन्दू राष्ट्र के नेता बने। आज भी हिन्दू बच्चे मदरसों में पढ़ते हें पर उनकी गिनती काफी कम है। 1947 में देष मैं ज्यादातर मदरसे और कुछ पाठषालायें थीं। भारत में हिन्दू–मुसलमान हमेषा मिलजुल कर रहते और ज्ञान–विज्ञान के सभी क्षेत्रों में आपस में विचार–विमर्ष करते रहते थे। खानकाहें और मठ इस काम में महत्वपूर्ण योगदान करते थे। हमारी तालीम का आधार पुरानी किताबें, वेद, पुराण, कुरान, वगैरा रही हैं। अगर आप मजहब को नहीं मानते तो भी समाजविज्ञान के लिहाज से इन किताबों पर गौर करना होगा। हमारे मुल्क में मदरसों से पढ़े लोग जिन्दगी के हर फन में माहिर होते थे। 1857 की पहली जंगे–आजादी से सबक लेकर अंग्रेजों ने हिन्दू–मुसलमानों के बीच फूट डालने की हर कोषिष की। उन्होंने मदरसों व मठों को खत्म कर डाला। आजादी के बाद उर्दू राष्ट्रीय भाषा नहीं रही और इसकी वजह से भी मुसलमान षिक्षा के मामले में पिछड़ गये। जो भी कौमें षिक्षा में पिछड़ती हैं वह कहीं की नहीं रहती। आज यहूदियों की तरक्की षिक्षा की वजह से है। षिक्षा का ताल्लुक आर्थिक स्थिति से है। इल्म से पहले हमें रोटी चाहिये। इसके लिये हमें दीनी तालीम की तरह दुनियावी तालीम पर भी बराबर जोर देना होगा। अगर आप भूगोल, साइंस, फिजिक्स, केमेस्ट्री, आदि नहीं जानते तो बहुत सी चीजें समझ नहीं सकते हैं, न दुनिया में तरक्की ही कर सकते हैं। आज आम जनता की नजर में इल्म जैसे दो किस्म का हो गया है–बहुसंख्यकों का इल्म और अल्पसंख्यकों का इल्म। हालांकि ऐसी तस्वीर बनाने में इस्लाम के दुष्मनों का भी काफी बड़ा हाथ है, पर हमें इस समझ को तोड़ना है। हमारे नौजवान तबलीग में जिस जोषो–खरोष से हिस्सा लेते हैं उसका कुछ हिस्सा मदरसों और दुनियावी तालीम की तरफ भी मोड़ना होगा। अगर आप दुनिया की फितरत नहीं समझेंगे तो दीन कैसे समझेंगे और उसका प्रचार कैसे करेंगे। मेरे बाबा स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई की मषहूर 'रेषमी रुमाल' तहरीक से जुड़े थे। वे हकीम भी थे और राजनीतिक कार्यकर्ता भी। क्या आज हमें सिर्फ इमाम ही पैदा करने हैं? हालांकि अंग्रेजी और दुनियावी तालीम से तमाम मुसलमान आज दुनिया के ऊंचे मुकामों तक पहुंच गये हैं, पर हम इस समाज से भाग नहीं सकते। हमें इसे ठीक करना है। दीनी तालीम के साथ दुनियावी व आधुनिक तालीम को जोड़ने से तमाम तालिबेइल्म दुनिया के हर क्षेत्र में अपना नाम रोषन कर रहे हैं। अनीस अंसारी जैसे बड़े अफसर और प्रो. आलम षिबली जैसे युनिवर्सिटी के प्रोफैसर इसके उदाहरण हैं। जिस तरह केरल के मदरसों ने आधुनिक षिक्षा से अपने को जोड़ा है वैसा ही हमारे मदरसे–मकतब भी कर सकते हें। नेषनल ओपेन स्कूल की शाखायें लगभग हर जिले में हैं। उनके साथ जुड़कर हम अपने बच्चों को आसानी से आधुनिक षिक्षा भी दिला सकते हैं। मदरसों–मकतबों में जुबान की पाबंदी नहीं होनी चाहिये। दुनिया भर में मदरसे वहां की जुबानों में पढ़ाते हैं। मदरसों को आधुनिक बनाना होगा। हमें प्रो. मूनिस रजा के उदाहरण से सीखना चाहिये। वे जवाहरलाल नेहरू विष्वविद्यालय (जेएनयू), नई दिल्ली की नीव रखने वालों में प्रमुख थे। उन्होंने वहां तमाम विषयों के जो निसाब (पाठ्यक्रम)

बनाये वे आज हिन्दुस्तान में सभी के लिए आदर्ष बन गये हैं। उन्होंने पूरी तालीम को मकड़जालों से आजाद कर नये जमाने से जोड़ा। मदरसों–मकतबों में भी हमें ऐसा ही करने की कोषिष करनी होगी।' गिरि विकास अध्ययन संस्थान के प्रोफेसर एस.एस.ए. जाफरी ने इन शब्दों के साथ 'नालन्दा' द्वारा बाराबंकी में आयोजित सेमिनार का उद्घाटन किया।

'मकतब–मदरसा में गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक षिक्षा' पर 24 जनवरी, 2009 को इस सेमिनार का आयोजन 'नालन्दा' द्वारा मुस्लिम मुसाफिरखाना, सट्टी बाजार, बाराबंकी में किया गया। सेमिनार का उद्घाटन गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ में प्रोफेसर व प्रख्यात अर्थषास्त्री एस.एस.ए. जाफरी ने किया। प्रोफेसर जाफरी ने मुस्लिम समाज की आर्थिक स्थिति पर प्रदेष के अनेक जिलों में कई अध्ययन किये हैं। मुस्लिम समाज पर विभिन्न विकास योजनाओं, वैष्वीकरण, नई आर्थिक नीतियों, शहरीकरण, पर्यावरण समस्याओं, आदि से पड़ने वाले प्रभावों के अध्ययन में उनकी विषेष रुचि है। वे विष्वविद्यालयों में पढ़ाने तथा अनेक सेमिनारों में हिस्सा लेने के लिए कई देषों में जा चुके हैं। इसके कारण पूरी दुनिया में फेले इस्लामी समाजों पर उनकी समझ और गहरी हुई है। मकतब–मदरसा षिक्षा को गुणवत्तापूर्ण व आधुनिक बनाने के काम में वे लगातार नालन्दा से सहयोग कर रहे हैं। नालन्दा द्वारा अगस्त, 2008 में इसी मुद्दे पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। बाराबंकी के सेमिनार में भाग लेने वाले विषिष्ट व्यक्तियों में स्थानीय अजीमुद्दीन अषरफ इस्लामिया (निबलेट) कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य मो. इलियास खां वारसी व मदरसा दारुल उलूम, बाराबंकी के पिंसिपल मौलाना अब्दुल रज्जाक शामिल थे। वारसी साहब कई भाषाओं के विद्वान तथा प्रतिष्ठित षिक्षक रहे हैं। उनके पढ़ाये बच्चे आज जिन्दगी के तमाम क्षेत्रों में ऊंचे मुकामों तक पहुंचे हैं। अपने षिक्षण कार्य व समाज की तरक्की के प्रयासों से आपने जिले व प्रदेष में अपनी खास जगह बनाई है। मौलाना अब्दुल रज्जाक साहब जिले में मकतब–मदरसों की तालीमी तरक्की के काम में काफी लंबे समय से लगे हैं। हालांकि वे पहले किये प्रयासों को पूरी सफलता न मिलने से दुखी हैं, पर नालन्दा के हालिया प्रयासों से उनमें नया जोष भर गया है। वे अपनी पूरी ऊर्जा से मदरसों को आधुनिक बनाने के लिए मुदर्रिसों, मदरसा प्रबंधकों व समुदाय की मानसिकता तैयार करने के काम में लगे हैं। सेमिनार के आयोजन व उसके संचालन में नालन्दा, लखनऊ के निदेषक श्री प्रभात झा, समन्वयक श्री मोहम्मद आसिम सिद्दीकी, श्री मोहम्मद हिदायतुल्ला आजमी तथा 5 ब्लाक समन्वयकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गौरतलब है कि 5 में से एक ब्लाक समन्वयक महिला हैं और मुस्लिम समाज में व्याप्त तमाम पूर्वाग्रहों के बावजूद उन्होंने अपने लिये जनता के दिलों में खास जगह बना ली है। सेमिनार में लगभग 70 प्रतिभागियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। इनमें विभिन्न मकतब–मदरसों के मुदर्रिस, हैड मुदर्रिस व मैनेजर शामिल थे। सेमिनार की शुरुआत कुरान पाक की तिलावत व कई नातों से हुई। इनमें मषहूर शायर मरहूम खुमार बाराबंकवी की एक नात भी शामिल थी। पंजीकरण के बाद नालन्दा के निदेषक श्री प्रभात झा ने प्रतिभागियों का स्वागत व सेमिनार के उद्देष्यों पर प्रकाष डालते हुए इस विषय में संस्था के कामों व भावी योजनाओं की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रो. एस.एस.ए. जाफरी के उद्घाटन भाषण के बाद नालन्दा में मकतब–मदरसा षिक्षा कार्यक्रम के संयोजक मोहम्मद आसिम सिद्दीकी ने संस्था द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रम के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इसके बाद प्रतिभागियों के लिए खुले सत्र व चायपान के बाद प्रो. जाफरी ने मदरसों में गुणवत्तापूर्ण दुनियावी प्राथमिक षिक्षा के बारे में अपने विचार रखे। मदरसा दारुलउलूम, बाराबंकी के प्रिंसिपल मौलाना अब्दुल रज्जाक ने मकतब–मदरसा में गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक षिक्षा की स्थिति पर उर्दू में अपना पर्चा पेष किया। इसके बाद विषय पर प्रतिभागियों द्वारा खुली चर्चा के बाद अजीमुद्दीन अषरफ इस्लामिया कालेज के पूर्व पिंसिपल मोहम्मद इलियास खां वारसी ने अपने अनुभवों के आधार पर मकतब–मदरसा षिक्षा में आधुनिक षिक्षा सिद्धान्तों को बेहतर तरीके से लागू करने के बारे में अनेक सुझाव दिये जिनको प्रतिभागियों ने बहुत पसंद किया। दोपहर में भोजन के बाद आयोजित खुले सत्र में प्रतिभागियों ने अपनी समस्यायें और सुझाव खुल कर सामने रखे जिनका विषिष्ट अतिथियों, नालन्दा के निदेषक व

कार्यक्रम समन्वयक ने जवाब दिया तथा भविष्य की योजनाओं का खाका भी सामने रखा। सेमिनार के अन्त में नालन्दा के श्री मोहम्मद हिदायतुल्ला आजमी ने प्रतिभागियों का धन्यवाद दिया। सेमिनार के सबसे बुजुर्ग प्रतिभागी द्वारा दुआ के बाद फिर मिलने के वादे के साथ सेमिनार का समापन हुआ। कार्यक्रम का संचालन मोहम्मद आसिम सिद्दीकी ने किया।

नालन्दा के निदेषक श्री प्रभात झा ने प्रतिनिधियों व विषिष्ट अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि नालन्दा पिछले 10–11 साल से प्राथमिक षिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने की दिषा में संदर्भ केन्द्र की तरह काम कर रही है। इसका प्रमुख काम प्राथमिक षिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं को तकनीकी सहायता करना रहा है। उसका मुख्य काम षिक्षकों की क्षमतायें बढ़ाने पर केन्द्रित रहा है। नालन्दा लड़कियों व आदिवासियों की षिक्षा के क्षेत्रों में भी कार्यरत है। संस्था अपने शुरुआत से ही उत्तर प्रदेष के तमाम तालीमी प्रोग्रामों में हिस्सा लेती रही है। नालन्दा लगातार षिक्षक प्रषिक्षण, पढ़ने–पढ़ाने की सामग्री तैयार करने, षिक्षा शोध, प्रारम्भ शैक्षणिक पत्रिका निकालने आदि कामों में लगी है। श्री झा ने स्कूल से बाहर रह गये करोड़ों बच्चों की ओर इषारा करते हुए कहा कि जब तक सभी बच्चों को षिक्षा से नहीं जोड़ा जाता तब तक देष–प्रदेष का विकास नहीं हो सकता है। षिक्षा गुणवत्तापूर्ण होनी चाहिये। इसका सबसे बड़ा पैमाना यही है कि बच्चा चीजों को रटने के बजाय उन पर गहराई से गौर करे तथा उनके प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी अपनाये। बच्चे का विकास स्वतंत्र चिन्तक के रूप में होना चाहिये। षिक्षा व षिक्षक की योग्यता का प्रमाण इसी बात से मिलता हे कि बच्चे में सवाल पूछने व रचना करने की क्षमता समुचित रूप से विकसित हुई है या नहीं। मदरसा षिक्षा पर अपने अनुभवों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि दीनियाती षिक्षा के तरीके दूसरे विषयों में भी प्रयोग किये जा रहे हैं जबकि आधुनिक षिक्षण पद्धतियों ने बच्चों तथा षिक्षकों को केन्द्र में रखने के अनेक प्रयोग किये हैं। आधुनिक बाल केन्द्रित आनन्ददायक षिक्षा सिद्धान्तों को लागू करने से मदरसों के छात्र सामाजिक विकास में और अधिक योगदान कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि मकतब–मदरसा षिक्षा में नालन्दा के हस्तक्षेप का मतलब बच्चों के संज्ञानात्मक विकास के नये रास्ते तलाष करने के साथ बाराबंकी व सीतापुर के मदरसों के साथ काम कर एक माडल विकसित करना है। श्री झा ने कहा, 'हम चाहते हैं कि मकतब–मदरसा षिक्षा का एक ऐसा माडल विकसित हो जिसमें दीनी व दुनियावी षिक्षा पर बराबर जोर हो ताकि यहां से निकलने वाले बच्चे सभी क्षेत्रों में अपनी पहचान बना सकें। इसके लिये हम नये मदरसों के साथ संबंध बनाना व अपने कार्यक्रम को अधिक गहराई और विस्तार देना चाहते हैं। लखनऊ में हमने इस संबंध में राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया था जिसमें आप में से कई लोगों ने हिस्सा भी लिया था। अब हम क्षेत्रीय स्तर पर ऐसे सेमिनार आयोजित करना चाहते हैं। आषा है कि इन कामों में आपका पूरा सहयोग मिलेगा जिससे हम एकसाथ मिल कर मुस्लिम समाज की षिक्षा को बेहतर बना कर देष–प्रदेष को प्रगति की नई राह पर तेजी से आगे ले जा सकेंगे।'

उद्घाटन भाषण के बाद प्रतिनिधियों के सवालों के जवाब में प्रो. एस.एस.ए. जाफरी ने हजरत अली का वह मषहूर कथन याद दिलाया कि 'वह इल्म, इल्म नहीं जिससे फायदा न हो।' उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि मकतब–मदरसों के छात्र किसी से कम नहीं हैं पर उनका कोर्स बहुत ज्यादा है तथा मदरसों में सख्ती भी बहुत है। अपना उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि कैसे मौलवी साहब की सख्ती से परेषान होकर उन्होंने मदरसा छोड़ने की बात सोची थी। उन्होंने मुदर्रिसों से जोर देकर कहा कि आधुनिक षिक्षाविज्ञान के अनुसार बच्चों को दंड देकर कुछ नहीं सिखाया जा सकता है। इससे उनका बचपन मर जाता है व पूरा व्यक्तित्व बिगड़ सकता है। बाराबंकी में मुस्लिम समाज के स्कूल जाने योग्य (5–15 वर्ष आयु वाले) 11 प्रतिषत बच्चे किसी स्कूल में नहीं जाते हैं और केवल 4 प्रतिषत बच्चे मदरसा जाते हैं। शाहजहांपुर में हालत और खराब है, वहां 35 प्रतिषत बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं। मुस्लिम समाज के अपने अध्ययनों का हवाला

देते हुए उन्होंने बताया कि प्रदेष के 21 जिलों में मुसलमानों की जनसंख्या औसत से ज्यादा है पर उनकी हालत बहुत खराब है। जहां अन्य समुदायों की औसत आमदनी 26000 रुपये है वहां मुसलमानों की औसत आमदनी केवल 4000 रुपये है। उन्होंने बताया कि अधिकांष गांवों में मुसलमानों की हालत बहुत खराब है। ज्यादातर लोगों के पास खेती की जमीन नहीं है और वे छोटे–छोटे कुटीर उद्योगों में लगे हैं। मुसलमानों का 25 प्रतिषत सीमान्त किसान हैं जबकि 40 प्रतिषत घरेलू उद्योगों पर निर्भर हैं। मुसलमान कारीगरों की औसत आमदनी केवल 20 से 40 रुपये रोजाना है। कारीगरों को अपनी मेहनत का सही दाम नहीं मिलता है जबकि बिचौलिये उनकी मेहनत पर ऐष करते हैं। उन्होने अंगौछा बनाने का उदाहरण देते हुए बताया कि जिन अंगौछों को निर्यात किया जाता है उनको तैयार करने वाले कारीगर को दिन भर काम करने के बावजूद 40–50 रुपये ही मिल पाते हैं। (गौरतलब है कि यह सेमिनार बाराबंकी के सट्टी बाजार में हो रहा था। यह जगह हैंडलूम का प्रमुख बाजार है जहां से कारीगर अपनी जरूरत का सामान ले जाते हैं व तैयार माल बेच जाते हैं। कार्यक्रम स्थल से बाहर देखने पर कारीगरों की गरीबी का आलम जाफरी साहब की बातों को सौ फीसदी सही साबित करता था।) प्रो. जाफरी मदरसा छात्रों द्वारा दूसरे हुनर सीखने के स्तर के बारे में संतुष्ट नहीं लगे। छोटे–मोटे काम धंधे सीखने से आदमी जिन्दा तो रह सकता है पर जिन्दगी में बहुत आगे नहीं बढ़ सकता है। प्रारम्भिक स्तर पर दुनियावी षिक्षा पर बराबर जोर न देना इसकी एक वजह हो सकती है। इससे मदरसों के छात्र बहुत आगे नहीं निकल पाते हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से पूछा कि 'क्या हमें सिर्फ कंप्यूटर आपरेटर चाहिये, कंप्यूटर इंजीनियर नहीं?'

नालन्दा में मकतब–मदरसा कार्यक्रम के समन्वयक श्री मोहम्मद आसिम सिद्दीकी ने कार्यक्रम तथा नालन्दा द्वारा किये जाने वाले के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि नालन्दा का काम मकतब–मदरसा का एक माडल तैयार करना है ताकि दूसरे संस्थान इससे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ सकें व षिक्षा को बेहतर बना सकें। इसके लिये मदरसा षिक्षकों को प्रषिक्षण दिया जा रहा है। नालन्दा पिछले 6–7 सालों से इस क्षेत्र में काम कर रही है। संस्था 200 से अधिक मकतब–मदरसों में अपना कार्यक्रम चला रही है जिनमें से 40 मदरसे झारखंड में हैं। उत्तर प्रदेष के बाराबंकी, सीतापुर, बहराइच और भदोही में यह कार्यक्रम चलाया जा रहा है। अब तक इन जिलों के 192 मदरसों के 1304 मुदर्रिसों को प्रषिक्षित किया जा चुका है। इन जिलों के मकतब–मदरसों को अकादमिक मदद भी दी जा रही है। बाराबंकी व सीतापुर के 16 मदरसों को माडल मदरसा बनाने का काम इनमें प्रमुख है। नालन्दा मदरसा षिक्षकों को दिये जाने वाले प्रषिक्षण को दो भागों में बांटता है। पहले ओरियंटेषन (उन्मुखीकरण) प्रषिक्षण देकर बाद में विषयवार प्रषिक्षण दिया जाता है। इसके लिये हमने संदर्भ समूहों का निर्माण किया है तथा मदरसा षिक्षा पर रिसर्च भी कर रहे हैं। हम 15 ब्लाकों तक पहुंचे हैं और क्लस्टर बना कर षिक्षकों को प्रषिक्षित किया जा रहा है। इस तरह 23 क्लस्टर बने हैं जिनमें हम हर महीने पहुंचने की कोषिष करते हैं। हमने परवाज, पारस, आगाज, हमकदम–1 व हमकदम–2 प्रषिक्षण माड्यूल बनाये हैं। बच्चों की रचनात्मकता बढ़ाने के लिए बच्चों की दो कार्यषालायें की जा चुकी हैं। इन कार्यषालाओं में शामिल बच्चों ने तमाम दूसरे कामों के साथ अपनी मैगजीन बनाने जैसा पेचीदा काम भी अंजाम दिया। नालन्दा नियमित रूप से षिक्षकों के लिए 'प्रारम्भ' पत्रिका छाप रहा है। मदरसा छात्रों के लिए हमने कोर्स की किताबें छापी हैं और अब हम उनके लिए कहानियां इकट्ठा कर एक किताब छापने की कोषिष कर रहे हैं। मोहम्मद आसिम ने बताया कि मदरसों के निसाब (पाठ्यक्रम) अलग–अलग होने से बहुत दिक्कतें आती हैं। इनको समान होना चाहिये। उन्होंने इस बात पर खुषी जाहिर की कि मदरसे अपनी षिक्षा को बेहतर बनाना चाहते हैं तथा उनमें दुनियावी षिक्षा को अहमियत देने की समझ भी पैदा हो रही है। बाराबंकी के 90 प्रतिषत मदरसों ने दीनी व दुनियावी तालीम के बीच संतुलन की कोषिषें की हैं। सीतापुर के भी 60 प्रतिषत मदरसों ने ऐसी कोषिषें की हैं। अब तक मकतब–मदरसों के लगभग 37000 बच्चों तक पहुंच बनाई जा सकी है। मदरसों की तरफ से सामाजिक जागरूकता फैलाने की

कोषिष भी होनी चाहिये ताकि कोई बच्चा बिना तालीम के न रह जाये। प्रतिभागियों का सुझाव था कि नालन्दा को भी ऐसे बच्चों पर ध्यान देने की कोई व्यवस्था बनानी चाहिये जो अभी किसी स्कूल या मदरसों में नहीं जा रहे हैं।

मदरसा दारुलउलूम, बाराबंकी के प्रिंसिपल मौलाना अब्दुल रज्जाक सेमिनार के विषिष्ट अतिथि थे। उन्होंने उर्दू में अपना पर्चा पेष किया। उन्होंने नालन्दा की कोषिषों पर खुषी जाहिर करते हुए इस बात पर अफ्सोस भी जाहिर किया कि यह सोच मदरसों के मुदर्रिसों व मैनेजरों की ओर से क्यों नहीं आई? अपने पर्चे व भाषण में उन्होंने इस्लाम में षिक्षा पर जोर दिये जाने के इतिहास पर प्रकाष डाला। कुरान पाक ने तालीम की अहमियत का जो पैगाम दिया है वह सिर्फ मुसलमानों ही के लिए नहीं बल्कि पूरी इन्सानियत के लिए है। ऐसा पैगाम दूसरी जगह मिलना मुष्किल है। तालीम की जरूरत सबको है तथा वह अपने आप में पूरी होनी चाहिये। अधूरी तालीम से भी किसी की तरक्की नहीं हो सकती है। आज कंप्यूटर तालीम को मकतब–मदरसों में शामिल करना बिल्कुल जरूरी हो गया है। उन्होंने मदरसा छात्रों व मुदर्रिसों की दिक्कतों का मुख्य कारण तालीम के प्रति सही नजरिये की कमी माना। उन्होंने सवाल उठाया, क्या आज के मकतब–मदरसा पाठ्यक्रमों से यह जरूरतें पूरी हो सकती हैं? इस्लामी षिक्षा संस्थानों की प्रगति की बात करते हुए उन्होंने नदवा का उदाहरण दिया। यहां बहुत पहले ही इंटर तक की तालीम में अंग्रेजी को जरूरी करार दिया गया था। अब उन्होंने कंप्यूटर षिक्षा को भी जरूरी कर दिया है। पहले एक निसाब (पाठ्यक्रम) कई साल पहले तैयार कराया गया था, पर प्रषिक्षित मुदर्रिसों की कमी से उसे लागू नहीं किया जा सका। आज मकतब–मदरसों में कार्यरत मुदर्रिसों के प्रषिक्षण के साथ नई किताबों की भी सख्त जरूरत है। ज्यादातर मदरसे अपनी षिक्षा में दुनियावी षिक्षा जोड़ने की जरूरत महसूस कर रहे हैं। दीनी एतबार से तो मकतब–मदरसे अपनी षिक्षा में पूरी तरह कामयाब हैं, पर उसी तरह वे दुनियावी एतबार से लगभग सिफर ही हो जाते हैं। मौलाना रज्जाक साहब ने सरकार द्वारा सभी मदरसों को हाल में सीबीएसई की मान्यता दिये जाने की घोषणा का स्वागत किया और उम्मीद जाहिर की कि इससे मदरसों की आर्थिक समस्यायें दूर होंगी। उन्होंने अनेक दूसरी बातों की तरह मदरसा षिक्षा की गुणवत्ता में कमी का दोष षिक्षकों की लापरवाही पर भी डाला। उन्होंने बड़ी साफगोई से कहा कि अनेक वजहों से आज तमाम मुदर्रिस ठीक से पढ़ा नहीं रहे हैं। जहां वे ठीक से पढ़ाते हैं वहां नतीजे बेहतर होते हैं। इस सिलसिले में उन्होंने फैजाबाद के एक मदरसे का उदाहरण दिया जहां के बच्चे दूसरे स्कूलों से बेहतर नतीजे लेकर सामने आते हैं। उनका कहना था कि मदरसे के एक लड़के का आई.ए.एस में सफल होना बहुत खुषी की बात है, पर वह पूरी कौम के लिए ज्यादा काम नहीं कर पायेगा। इसके लिये मदरसों के सैकड़ों तलबा को जिन्दगी के सभी क्षेत्रों में कामयाबी हासिल करनी होगी। नालन्दा के कार्यक्रम समन्वयक मोहम्मद आसिम सिद्दीकी ने इस सिलसिले में कहा कि संस्था सभी मुदर्रिसों को प्रषिक्षित करना चाहती है। वह अब तक प्रषिक्षण से बाहर रह गये मुदर्रिसों को आवासीय प्रषिक्षण देने की योजना भी बना रही है। संस्था अपने पूरे कार्यक्षेत्र में जिन 60 मदरसों को माडल बनाने की कोषिष कर रही है उसमें से बाराबंकी में केवल 11 हैं। उन्होंने मुदर्रिसों से अपील की कि वे भी अपने मदरसों को माडल मदरसा बनवाने के लिए आगे आयें।

सेमिनार में बाराबंकी की नामीगिरामी षिक्षण संस्था अजीमुद्दीन अषरफ इस्लामिया (निबलेट) कालेज के पूर्व प्रधानाचार्य मोहम्मद इलियास खां वारसी विषिष्ट अतिथि थे। उन्होंने षिक्षकों की जरूरतों पर गौर करते हुए उनकी जिम्मेदारी का सवाल भी उठाया। उन्होंने सवाल किया कि कई मदरसों को अनेक रास्तों से मदद मिलती है, पर क्या उसका फायदा तलबा को पहुंचता है? मदरसों में पढ़ने वाले बच्चों का चरित्र बनाने पर भी उन्होंने जोर दिया। इस सिलसिले में अपने कार्यकाल का एक उदाहरण उन्होंने दिया। उन्होंने बताया कि एक बार कालेजों का खर्च कम करने के सिलसिले में सवाल उठा कि जापान के कालेजों में तो प्रयोगषाला सहायक नहीं होते हैं फिर हिन्दुस्तान में

इनकी क्या जरूरत है? अफ्सोस की बात है कि हिन्दुस्तान में बिना प्रयोगषाला सहायक के प्रयोगषाला के सामानों की हिफाजत मुष्किल है। इस्लाम में षिक्षा के महत्व की बात करते हुए उन्होंने बताया कि कुरान पाक की पहली आयत पढ़ने के बारे में आई। हमारे पैगम्बर ने फरमाया कि पढ़ने के लिए अगर चीन तक जाना पड़े तो जाओ। उनका इषारा पढ़ाई में सामने आने वाली दिक्कतों की ओर था क्योंकि उस समय अरब से चीन तक पहुंचना बहुत ही मुष्किल काम था। उन्होंने समाज में फैल रही बुराइयों को रोकने में भी मुदर्रिसों की भूमिका पर बहुत जोर दिया। एक पुरानी कहावत थी कि बुराई को हाथ बढ़ा कर रोक दो, अगर ऐसा न कर सको तो उसे अपने दिल से रोक दो। वारसी साहब ने षिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नये प्रयोगों को खुले दिल से अपनाने की पुरजोर वकालत की। उनका कहना था कि नये माध्यमों जैसे टीवी, सीडी, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि का बेहतर इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे बच्चों का तलफ्फुज (उच्चारण) ठीक किया जा सकता है और साइंस की बातें आसानी से समझाई जा सकती हैं। उन्होंने पाठ्यक्रम निर्धारित करने तथा मदरसे के लिए इसके आधार पर साल भर का टाइमटेबल बनाने पर जोर दिया। इस टाइमटेबिल में पढ़ाई के साथ खेलकूद व सांस्कृतिक षिक्षा को भी उचित स्थान दिया जाना चाहिये। साल भर में एक कार्यक्रम कराया जाना चाहिये जिसमें दूसरे स्कूलों के बच्चों के साथ मदरसा छात्रों को इनामी प्रतियोगिताओं के लिए इनाम की व्यवस्था होनी चाहिये। इससे उनमें कमतरी का अहसास घटेगा तथा दूसरे बच्चों से प्रतियोगिता की भावना बढ़ेगी। दीनियात की समझदारी जांचने व समुदाय से बच्चों की इज्जत बढ़ाने के लिए जिले के सारे मदरसों के सांस्कृतिक ज्ञान की प्रतियोगिता करवा कर इनाम दिये जा सकते हैं। उन्होंने मदरसा षिक्षकों के प्रषिक्षण पर जोर देते हुए पाठ को सरल व आकर्षक ढंग से पेष करने के लिए पाठ योजना की जरूरत पर प्रकाष डाला। जिस तरह मदरसों को माडल बनाने की जरूरत है उसी तरह मुदर्रिस को भी बच्चों के लिए माडल बनना चाहिये। अपने बचपन की याद करते हुए उन्होनें बताया कि किस तरह एक मौलवी साहब बच्चों के दोस्त बन गये थे। आज भी मुदर्रिसों को बच्चों का दोस्त बनने की जरूरत है। उन्होंने मुदर्रिसों से अपील की कि वे बच्चों को डाटे नहीं बल्कि उनमें सवाल पूछने का जज्बा पैदा करें और उनके सवालों का जवाब दें। बच्चों को रटाना बिल्कुल ठीक नहीं है। इसके बजाय उनको खुद समझने के मौके देना चाहिये। पहले समझा जाता था कि बच्चे खाली बर्तन हैं और षिक्षक सारे ज्ञान का भंडार है या बच्चे कच्ची मिट्टी के समान हैं और षिक्षकों को उन्हें पका कर बर्तनों में बदल देना है। आधुनिक षिक्षा सिद्धान्तों ने इन धारणाओं को खारिज कर दिया है। वारसी साहब ने इसी बात पर जोर देते हुए कहा कि मुदर्रिसों को समझ लेना चाहिये कि बच्चों में सबकुछ मौजूद है जिसे सामने लाने के मौके मुदर्रिस को देने हैं। बच्चे का मूल्यांकन भी लगातार होते रहना चाहिये। इसके लिए तिमाही, छमाही व सालाना परीक्षा का इंतजाम होना चाहिये। ऐसी परीक्षाओं के माडल पेपर तैयार करने में अनुभवी मुदर्रिसों व माहरीनों की मदद ली जानी चाहिये।

सेमिनार के अन्तिम चरण में खुला सत्र आयोजित किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने अपने विचार और समस्यायें सामने रखीं जिन पर विषिष्ट अतिथियों व नालन्दा के प्रतिनिधियों ने अपना पक्ष रखा। मुदर्रिसों के प्रषिक्षण की जरूरत सबसे ज्यादा उभर कर सामने आई। अधिकांष प्रतिभागियों का मानना था कि बिना प्रषिक्षण के सही नतीजे सामने नहीं आते हैं। मुदर्रिस चाहे जितनी मेहनत करे पर छात्रों की समुचित प्रगति के लिए प्रषिक्षण लगातार जरूरी है। मदरसा प्रबंधकों की समझदारी बनाने की एक और महत्वपूर्ण समस्या सामने आई। जब तक प्रबंधक षिक्षक प्रषिक्षण का महत्व नहीं समझते तब तक वे उसके लिये मौके नहीं देते। अगर षिक्षक ऐसे सेमिनारों में नहीं आयेंगे तो वे भला क्या सीखेंगे? इसके लिये सभी प्रतिभागियों ने नालन्दा से अनुरोध किया कि वे प्रबंधकों के साथ अलग से बैठके करें। नालन्दा के ब्लाक संयोजकों ने अपनी बात सामने रखते हुए बताया कि अक्सर मदरसा प्रबंधक आसानी से मिलते नहीं है या वे मदरसा षिक्षा के बारे में बातचीत का ज्यादा मौका नहीं देते हैं। नालन्दा के कार्यक्रम समन्वयक आसिम सिद्दीकी ने भी बताया कि

अक्सर मुदर्रिस और मैनेजर मीटिंग का समय तय कर लेने के बावजूद उसमें नहीं आते हैं या मीटिंग में लिए फैसलों पर ठीक से अमल नहीं करते हैं। इस पर निबलेट कालेज के पूर्व प्रिसिंपल इलियास खां साहब ने अपने रसूख का इस्तेमाल कर मदरसा प्रबंधकों को मीटिगों में लाने का यकीन प्रतिभागियों तथा नालन्दा प्रतिनिधियों को दिलाया। सभी प्रतिभागियों, विषिष्ट अतिथियों व नालन्दा प्रतिनिधियों ने बड़े जोष के साथ तालियां बजा कर खां साहब की इस बात का स्वागत किया। मदरसों के निर्माण में समुदाय की भागीदारी बढ़ाने का मामला भी सामने आया। इस पर प्रतिभागियों ने अपनी–अपनी राय सामने रखी। ज्यादातर प्रतिभागियों का मानना था कि समुदाय अपनी बेहतरी के लिए मदरसों को और संसाधन देने को तैयार है, पर इसके लिये उसे पूरा यकीन दिलाया जाना चाहिये। कुछ प्रतिभागियों का यह भी मानना था कि समाज के अमीर लोगों गरीबों की षिक्षा और मदरसों की समस्याओं पर ठीक से ध्यान नहीं देते हैं और उनके लिए पैसा निकालने में कंजूसी करते हैं। उनका कहना था कि अगर समाज के सभी अमीर लोग मदरसों पर ध्यान दे दें तो संसाधनों की कमी नहीं रहेगी तथा इसके लिये सरकार या किसी दूसरे का मुंह नहीं देखना पड़ेगा। नालन्दा की महिला ब्लाक संयोजक ने अपनी बात सामने रखते हुए कहा कि पहले उनको अपने काम में दिक्कतें आईं, पर अब वे बखूबी अपना काम अंजाम दे रही हैं। बहुत से लोगों ने उनको शुरुआत में निराष किया कि इस्लामी समाज में औरतों की बात भला कौन सुनेगा, पर धीरे–धीरे यह भरम टूटा। आज पूरा समाज उनके काम को इज्जत की नजर से देखता है। सबसे बुजुर्ग प्रतिभागी ने अपने साथियों द्वारा जिले में मदरसे कायम करने में समुदाय का योगदान प्राप्त करने के तरीकों का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि किस तरह गरीब से गरीब घरों से एक–एक चुटकी आटा, एक–एक दाना अनाज व एक–एक पैसा चंदा इकट्ठा कर 33 जगहों पर मदरसों की स्थापना की गई। उन्होंने दीनी व दुनियावी तालीम को एकसाथ लाने के सिलसिले में दीनी तालीमी कौंसिल के काम की तारीफ की। अपने जमाने में बने मदरसों व मुदर्रिसों की तारीफ करते हुए उन्होंने बताया कि कैसे सरकारी स्कूलों के बच्चे भी अपने स्कूल छोड़कर मदरसों में आ जाते थे। इन बुजुर्ग मुदर्रिस की बातें सुन कर सभी प्रतिभागियों ने खुषी का इजहार किया व उनकी सीखों पर अमल करने का वायदा भी किया। नालन्दा के निदेषक श्री प्रभात झा ने बताया कि संस्था 16 मुदर्रिसों को एक्सपोजर विजिट के लिए बंगाल भेज रही है। इसके अलावा वह दूसरे प्रदेषों में चलने वाले मदरसों का अध्ययन कर रही है ताकि उनके द्वारा किये सुधारों को प्रदेष में भी लागू किया जा सके।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि नालन्दा के इस सेमिनार से मुदर्रिसों, हेड मुदर्रिसों व मदरसा प्रबंधकों में मकतब–मदरसा षिक्षा को आधुनिक बनाने के प्रति नया उत्साह पैदा हुआ। इसी के साथ नालन्दा के निदेषक, कार्यक्रम समन्वयक व ब्लाक संयोजकों को भी मुदर्रिसों की दिक्कतों की और गहरी जानकारी मिली। जहां विषिष्ट अतिथियों की बातों से मुदर्रिसों में अपने काम में सुधार लाने की जरूरत का अहसास गहरा हुआ वहीं विषिष्ट अतिथियों को भी मदरसा षिक्षा में तेजी से बदलाव न होने की वजहें समझने में मदद मिली। हालांकि नालन्दा प्रतिभागियों खासकर उनके ब्लाक संयोजकों ने प्रतिभागियों से अपनी बातें और समस्यायें खुल कर सामने रखने का कई बार अनुरोध किया और अनेक प्रतिभागियों ने ऐसा किया भी, पर उनकी सहभागिता अभी और बढ़ाने की जरूरत है। लगता है कि अधिकांष मुदर्रिस, हेड मुदर्रिस व मदरसा प्रबंधक पाठ्यक्रम में दुनियावी षिक्षा को शामिल करने के बारे में किसी गलतफहमी का षिकार नहीं हैं। संभवतः उनके सामने दीनी व दुनियावी षिक्षा का समन्वय करने वाले बेहतरीन माडल पेष करने तथा जमीनी स्तर पर उनको मदरसों में लागू करवाने की जरूरत है। हालांकि नालन्दा ने मदरसा षिक्षकों की बच्चों के साथ कार्यषालायें कराई हैं, पर इनकी गिनती और बढ़ाने की जरूरत है ताकि षिक्षक आधुनिक षिक्षण विधियों के प्रभावी होने का अनुभव कर सकें व उन पर चलने को मुष्किल न समझें। इसके लिये विषय आधारित दो–तीन दिन की केन्द्रित कार्यषालायें आयोजित करने की जरूरत है।

मुस्लिम समाज की गरीबी और बदहाली मुदर्रिसों के सामने शायद सबसे बड़ी समस्या के तौर पर सामने आती है। अगर रोटी मिलना ही तय न हो तो मुदर्रिस या कोई और आदमी दूसरी चीजों के बारे में कैसे सोच सकता है? बहुत अफ्सोस की बात है कि जब षिक्षा मित्र, षिक्षक व समाज के अन्य तबके अपनी जरूरतों के लिए बार–बार सड़कों पर उतरते हैं व उनकी बातें मीडिया के द्वारा जनता तथा सरकार तक पहुंचती हैं, पर मकतब–मदरसा षिक्षकों की बदहाली किसी की चिन्ता का विषय नहीं है। जब मदरसों को सीबीएसई की मान्यता देने व केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा उनको संसाधन उपलब्ध कराने के अन्य प्रयासों की बात हो रही है तो क्या मुदर्रिसों, हेड मुदर्रिसों व मदरसों के अन्य कर्मचारियों को अपने लिये तयषुदा तनख्वाह व दूसरी सहूलियतें मांगने का हक नहीं है? क्या इनके बिना मदरसों की षिक्षा बेहतर हो जायेगी? मुस्लिम समाज, राजनेताओं, षिक्षक संगठनों, मीडिया व जनता के हकों की आवाज उठाने वाले एनजीओ आदि सभी को इस बारे में फौरन कार्रवाई करनी होगी। मदरसा षिक्षा के बारे में केन्द्र सरकार की घोषणाओं को भी जल्दी से जल्दी जमीन पर लागू करने के लिए जनता का दबाव बनाने की जरूरत है। इसी के साथ–साथ समुदाय के अमीर लोगों को मदरसों के लिए उदारता से पैसा देने को तैयार करने की भी जरूरत है।

आज जहां मुदर्रिसों को बेहतर प्रषिक्षण, दुनियावी षिक्षा को मदरसों के पाठ्यक्रम में जोड़ने व मदरसों के संसाधन बेहतर बना कर उनको आधुनिक बनाने की जरूरत है वहीं उनकी रोजी–रोटी भी पक्की की जानी चाहिये। खुषी की बात है कि सेमिनार में शामिल विषिष्ट अतिथि व नालन्दा के निदेषक इन सारी बातों से बखूबी वाकिफ़ हैं। उम्मीद है कि आगे आने वाले समय में नालन्दा के सहयोग से मकतब–मदरसों की षिक्षा सुधरेगी जिससे तलबा व मुदर्रिस ही नहीं बल्कि पूरे मुस्लिम समाज और इसके साथ ही प्रदेष व देष की तेजी से तरक्की होगी।

प्रतिभागियों की सूची

क्रम	नाम	पता
1	मो0 रईष	मदरसा मोइनुल इस्लाम, सुढ़ियामऊ, बाराबंकी
2	जियाउल हक कासमी	मदरसा मोइनुल इस्लाम, सुढ़ियामऊ, बाराबंकी
3	हाफिज एजाज रसूल	मदरसा षहाबुल उलूम, षहाबपुर, बाराबंकी
4	मौलवी नूरूल हसन	दारूल फलाह, बड़ा गांव, बाराबंकी
5	मो0 असलम राही	इरशादुल उलूम, षेखपुर अलीपुर, बाराबंकी
6	मौलाना अनवार अहमद	षहाबुल उलूम, षहाबपुर, बाराबंकी
7	नसीरूल हक	अंसारूल उलूम, बाराबंकी
8	नफीसा खातून	फैजुल उलूम, आलापुर, बाराबंकी
9	अब्दुल रज्जाक नदवी	दारूल उलूम, बाराबंकी
10	मुबीन अहमद	जियाउल इस्लाम, फतेहपुर, बाराबंकी
11	मो0 उबैद अषहद	मदरसा षेख फरजन्द अली मेमोरियल, बाराबंकी
12	असगर अली नदवी	मुईनुल इस्लाम, सुढ़ियामऊ, बाराबंकी
13	जाबिर अली	आलिया फुरकानिया, फतेहपुर, बाराबंकी
14	मो0 जाहिद अली	अंसारूल उलूम, बाराबंकी
15	के0 बी0 सिंह	बब्बू वाली गली, लकड़मंडी, डालीगंज, लखनऊ
16	प्रो0 एस0एस0ए0 जाफरी	गिरी संस्थान, लखनऊ
17	कफील अहमद	षेख फरजन्द, बाराबंकी
18	मो0 नसीम नदवी	आलिया फुरकानिया
20	तनवीर हसन नदवी	बाराबंकी
21	षीबा खान	मदीनतुल उलूम, रसौली, बाराबंकी
22	खुर्षीद खान	मदीनतुल उलूम, रसौली, बाराबंकी
23	यार मोहम्मद	षमसुल हुदा, सूरतगंज, बाराबंकी
24	उमेर अहमद	षमसुल हुदा, सूरतगंज, बाराबंकी
25	वकार अहमद	षमसुल हुदा, सूरतगंज, बाराबंकी
26	मो0 उमर	दारूल उलूम, बाराबंकी
27	हसीब अहमद	दारूल उलूम, बाराबंकी
28	मो0 साबिर	मदरसा रहमानिया, रहमानगंज, बाराबंकी
29	मो0 अकील सिद्दीकी	दारूल उलूम, बाराबंकी
30	मो0 षकील	बाराबंकी
31	हाजी मसूल अहमद	मदरसा इस्लामिया, बाराबंकी
32	मो0 जफर	अमीनुल कुरान, दरियाबाद, बाराबंकी
33	फरजाना अंजुम	अमीनुल कुरान, दरियाबाद, बाराबंकी
34	इमरान अहमद	तालीमुल कुरान, बंकी, बाराबंकी
35	मो0 षबी अंसारी	बाराबंकी
36	नसीम अहमद	नालंदा, लखनऊ
37	अशफाक अहमद	नालंदा, लखनऊ
38	जीनत वाहिद	नालंदा, लखनऊ
39	सलीमुल्लाह फैजी	मदर हलीमा, बाराबंकी

क्रम	नाम	पता
40	तरन्नुम बानो	मदर हलीमा, बाराबंकी
41	मो0 असलम कुद्दूसी	मदरसा मदनी, चौखण्डी, बाराबंकी
42	अब्दुल वहाब	नालंदा, लखनऊ
43	मो0 अब्दुल लतीफ	रज्जाकिया, सूरतगंज, बाराबंकी
44	मो0 षब्बीर	रज्जाकिया, सूरतगंज, बाराबंकी
45	मो0 अहमद	बाराबंकी
46	जुनेद अहमद	जामियतुल हिरा, सफदरगंज, बाराबंकी
47	अब्दुल अहद	तालीमुल कुरान, जिन्हौली, बाराबंकी
48	इस्लाम कासमी	तालीमुल कुरान, सहरी, बाराबंकी
49	अब्दुल गनी	मदरसा इस्लामिया, बाराबंकी
50	अब्दुल अहमद	बाराबंकी
51	राहुल निगम	मदरसा दारूस्सलाम, रामपुर, बाराबंकी
52	मो0 अली नदवी	मदरसा इस्लामिया, बाराबंकी
53	समशुल हसन	मुजद्ददिया, रामपुर, बाराबंकी
54	राबिया बेगम	मुजद्ददिया, रामपुर, बाराबंकी
55	गुड्डू रिजवी	लखनऊ
56	मनीष धीमान	बाराबंकी
57	मो0 मुईज उस्मानी	मदीनतुल उलूम, रसौली, बाराबंकी
58	मो0 जलील	लखपेड़ा बाग, बाराबंकी
59	अहमद सईद	नालंदा, लखनऊ
60	षरीफ अहमद	रज्जाकिया, सूरतगंज, बाराबंकी
61	मो0 इसराईल	आरफिया, जैदपुर, बाराबंकी
62	मो0 याकूब	इमदादुल उलूम, जैदपुर, बाराबंकी
63	मो0 आसिम सिद्दीकी	नालंदा, लखनऊ
64	प्रभात झा	नालंदा, लखनऊ